आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2018-2020

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2187 • उदयपुर, शनिवार 19 दिसम्बर, 2020 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

अहमदाबाद-मुंबई बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को मिली पर्यावरणीय मंजूरी

अहमदाबाद–मुंबई हाई स्पीड रेल कॉरीडोर (बुलेट ट्रेन) परियोजना के लिए रेलवे को गुजरात तथा महाराष्ट्र में जरूरी पर्यावरणीय मंजूरी मिल गई है। रेलवे बोर्ड के चेयरमैन व सीईओ ने एक वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि इन दोनों राज्यों में वन्यजीव, वानिकी तथा तटीय क्षेत्र नियमन से संबंधित मंजूरी मिल गई है। उन्होंने यह भी बताया कि बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए 67 फीसदी जमीन रेलवे को मिल गई है। गुजरात में जरूरी 956 हेक्टेयर में से 825 हेक्टेयर जमीन मिल गई है, जो करीब 86 फीसदी है। जबकि महाराष्ट्र में 432 हेक्टेयर में से 97 हेक्टेयर (22 फीसदी) जमीन मिली है। वहीं, दादरा नगर हवेली में जरूरी आठ हेक्टेयर में से सात हेक्टेयर जमीन मिल गई है। रेलवे ने गुजरात में 325 किलोमीटर लंबी कॉरीडोर परियोजना के लिए 32,000 करोड़ रुपये का ठेका जारी किया है। बता दें कि करीब 1.08 लाख करोड़ रुपये की परियोजना का शिलान्यास 14 सितंबर, 2017 को किया गया था।

इस महत्वाकांक्षी परियोजना को दिसंबर 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य है। बुलेट ट्रेन 350 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी, जो अहमदाबाद–मुंबई के बीच 508 किलोमीटर की दूरी करीब दो घंटे में तय करेगी। फिलहाल ट्रेन से यह दूरी तय करने में सात घंटा और विमान से करीब एक घंटा का समय लगता है।

बीकानेर का जोड़बीड़ क्षेत्र बना ईस्टर्न एशिया फ्लाइवे के पक्षियों का नया ठिकाना

थाईलेंड यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर चाइयान को जब पता चला कि उनके छोड़े हुए ब्लैक काईट करीब 4 हजार किलोमीटर दूर भारत के बीकानेर शहर में है। जोड़ बीड़ कंजर्वेशन में सुरक्षित हैं। यहां उनके लिए प्रचुर मात्रा में भोजन है तो उन्होंने राहत की सांस ली। बर्ड वॉचर्स इस घटना से विस्मित और उत्साहित हैं क्योंकि यह एक नई और बड़ी खोज साबित हुई है।

जी हां, ईस्टर्न एशिया फ्लाइवे के पक्षियों ने अपने लिए नया डेस्टिनेशन खोज निकाला है। थाईलेंड से 4066 किलोमीटर लंबी उड़ान भरकर करीब 900 ब्लैक काईट यानी मिल्वस माइग्रेंस गोविंद प्रजाति के चील पहली बार एशिया के सबसे बड़े ऑपन डंपिग यार्ड जोड़बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व "आईबीए साइट" पहुंचे हैं। मध्य थाईलेंड के नाखोन नयोके प्रांत से इन्हें फरवरी 2020 में छोड़ा गया था। इनके शरीर पर सोलर प्लेट भी लगी हुई है।

थाईलेंड में बर्ड कंजर्वेशन से जुड़े चाइयान ब्लैक काईट की जीएसएम जीपीएस सिस्टम के माध्यम से सेटेलाइट से निगरानी कर रहे हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) के सदस्य दाउदी लाल बोहरा के सम्पर्क में है।

मिल्वस माइग्रेंस गोविंद प्रजाति के चील बीकानेर में भी बड़ी संख्या में है। लेकिन पहली बार किसी शिकारी पक्षी का थाईलेंड से राजस्थान के डेजर्ट की ओर मूवमेंट है। ईस्ट एशिया फ्लाइवे में ये रेप्टर्स चायना, म्यामांर, बांग्लादेश, थाईलेंड, ऑस्ट्रेलिया में उड़ते हैं। यह प्रजाति स्थानीय के साथ प्रवासी पक्षियों में भी सम्मिलित हो गई है। इन्होंने बांग्लादेश के रास्ते 12 जून को भारत में प्रवेश किया था। 6 जुलाई को छिंदवाड़ा में थे 7 सिमम्बर को इनके सिग्नल जोड़बीड़ में मिले। मार्च 2020 में टैगिंग किया। स्टेपी ईगल भी जोड़बीड़ मिला था। वह कजाकिस्तान से आया था।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान का "वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी"

दिव्यांग और निर्धन मानवों की सेवा के प्रमुख केन्द्र का नींव पूजन.....

सेवा की पहचान रखने वाला नारायण सेवा संस्थान उदयपुर अब देश और दुनिया के रोगियों और दिव्यांगों की सेवा के लिए उदयपुर शहर की माली कॉलोनी में एशिया का पहला फेब्रिकेशन सेंटर बना रहा है। जो अपना आप में खास होगा । संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' के अनुसार "वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी" के नाम से तैयार होने वाले सेन्टर की 11.12.2020 शुक्रवार को नींव रखी गई। संस्थान के इस भवन व हॉस्पीटल में दिव्यांगों, निर्धनों के लिए सभी सेवा आयाम होंगे।

नारायण सेवा संस्थान की गरीब दिव्यांगजनों की सेवा के लिए इसकी 23 अक्टूबर 1985 को पद्श्री कैलाश जी मानव ने नींव रखी थी। नारायण सेवा संस्थान 35 सालों से दिव्यांगों की सेवा के क्षेत्र मे कार्यरत है। यह अब तक 4 लाख से अधिक दिव्यांग बन्धुओं को नया जीवन दिया जा चुका है और विदेशों में संस्थान की शाखाएं सेवाएं दे रही हैं।

संस्थान में भारत के अलावा अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, युक्रेन, ब्रिटेन, और युंगाड़ा व यूएसए से भी इलाज के लिए मरीज आते रहते हैं। संस्थान द्वारा दिव्यांगों के निःशुल्क ऑपरेशन,

ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर, कृत्रिम अंग का वितरण किया जा रहा है।

संस्थान ने आदिवासी ग्रामीण बच्चों की दयनीय स्थिति देखकर निःशुल्क अंग्रेजी माध्यम की डिजिटल शिक्षा के लिए नारायण चिल्ड्रन एकेडमी की स्थापना की है। जिसके तहत् स्कूल बस– पिकअप–ड्रॉप, स्मार्ट क्लास, इन्डोर– आउटडोर गेम्स, खेल मैदान, पुस्तकें स्टेशनरी, गणवेश, भोजन, नाशता आदि की सुविधायें निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाती है। वहीं संस्थान ने दिव्यांगों को फ्री डेवलपमेंट कोर्स कराया है। दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों की शादी करवाई जाती है।

उदयपुर में बनने वाले वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी में आमजन के लिए 450 बैड वाला हॉस्पीटल तैयार होगा, जिसमें निःशुल्क चिकित्सा सुविधा मिलेगी। इसमें आवश्यक आधुनिक शल्य चिकित्साएं, जांचें, ओपीडी, सहित दिव्यांग व निःशक्तजनों को उपचार की सुविधाएं दी जाएगी। साथ ही सेंटर में ही भारत का प्रथम केन्द्रीय

मानव कृत्रिम अंगों का निर्माण सेंटर बनेगा और यहां तैयार होने वाले कृत्रिम अंगों का जरूरतमंदों को निःशुल्क वितरण भी किया जाएगा। मूक बधिर, निर्धन बच्चों को प्रशिक्षण देकर आत्म निर्भर बनाएगे।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी के फेब्रिकेशन सेंटर में निःशुल्क प्रज्ञाचक्षु, विमंदित, अनाथ, एवं निर्धन बच्चों को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी और उन्हें रोजगारोन्मुखी व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर पूर्ण देकर पूर्णकालिक आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल एवं संस्थापिका कमला जी अग्रवाल, निदेशिका वंदना जी अग्रवाल, एवं पलक जी, संस्थान ट्रस्टी देवेन्द्र जी चौबीसा, एवं वरिष्ठ साधकगण जितेंद्र जी गौड़, अंबालाल जी, दल्लाराम जी पटेल,रोहित जी, कुलदीप जी आदि कई साधक इस शुभअवसर पर उपस्थित थे।

लक्ष्य की धुन

प्रसिद्ध फ्रेंच वैज्ञानिक लुई पाश्चर एक महान विद्वान थे। उन्होंने मानवता की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया था। उन्होंने रेबिज के टीके की भी खोज की थी। फ्रांस के एक विश्वविद्यालय की उपकुलपति की बेटी से विवाह करना चाहते थे। बेटी के लिए लुई पाश्चर जैसा सुयोग्य वर मिलना मुश्किल था। बेटी की रजामंदी जानकर माता–पिता उनके विवाह के लिए तैयार हो गए। निश्चित दिन विवाह का मुहूर्त निकाला गया। विवाह के दिन सभी मित्र संबंधी चर्च पहुंच गए, लेकिन काफी प्रतीक्षा के बाद भी दूल्हे राजा के दूर–दूर तक दर्शन नहीं हो रहे थे। वधू व सभी परिजन दूल्हे को न देखकर परेशान हो गए। सभी उनकी खोज में लग गए। खोज करने पर उनके मित्र ने उन्हें प्रयोगशाला में पाया और देखा कि लुई पाश्चर पूरी तन्मयता और एकाग्रता से कोई प्रयोग करने में व्यस्त थे। अपने प्रयोग के अतिरिक्त उन्हें किसी तरफ ध्यान नहीं था। मित्र उनके पास जाकर बोला, यार! हद हो गई, आज तुम्हारा विवाह है। चर्च में तुम्हारा इंतजार हो रहा है। सभी तुम्हें तलाश रहे हैं। बंद करो अपना यह प्रयोग। यह तो बाद में भी हो जाएगा। मित्र की आवाज सुनकर लुई पाश्चर की एकाग्रता भंग हुई और वे बोले, अच्छा आज मेरा विवाह है। मुझे तो काम की धुन में याद ही नहीं रहा। कई वर्षो से मैं एक प्रयोग में जुटा हुआ हुआ था। अब उसके सकारात्मक परिणाम निकले हैं। इसलिए प्रयोग को पूरा करने की धुन में मुझे कुछ भी याद नहीं रहा। लुई पाश्चर अपना प्रयोग पूरा करने के बाद चर्च के लिए रवाना हुए। उनका विवाह धूमधाम के साथ हुआ। उनका कहना था–सचमुच महान काम यूं पूरे नहीं होते, उन्हें पूरा करने के लिए अपनी सर्वाधिक प्रिय व्यक्तिगत इच्छाओं को भी किनारे करना होता है।

प्रकृति का संदेश

संसार में दो प्रकार के पेड़ – पौधे होते हैं– प्रथम जो अपना फल स्वयं दे देते हैं। जैसे– आम, अमरुद, केला, चिकू, जामुन, अनार इत्यादि।

द्वितीय जो अपना फल छिपाकर रखते हैं। जैसे– गाजर, आलू, अदरक, प्याज इत्यादि।

जो फल अपने आप दे देते हैं, उन वृक्षों को सभी खाद–पानी देकर सुरक्षित रखते हैं, और ऐसे वृक्ष फिर से फल देने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

किन्तु जो अपना फल छिपाकर रखते हैं, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं, उनका वजूद ही खत्म हो जाता हैं।

ठीक इसी प्रकार – जो व्यक्ति अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वयं ही समाज सेवा में समाज के उत्थान में लगा देते हैं, उनका सभी ध्यान रखते हैं और वे मान–सम्मान पाते हैं।

वहीं दूसरी ओर – जो अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वार्थवश छिपाकर रखते हैं, किसी की सहायता से मुख मोड़े रखते हैं, वे जड़ सहित खोद लिए जाते है, अर्थात् समय रहते ही भुला दिये जाते है।

प्रकृति कितना महत्वपूर्ण संदेश देती है, बस समझने, सोचने और कार्य में परिणित करने की बात है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

दिव्यांग एवं निर्धन सामुहिक विवाह समारोह

27 दिसम्बर, 2020 प्रातः 11 बजे

दिव्यांग एवं निर्धन कन्या का कन्यादान

₹51000 DONATE NOW

Cisco webex Cisco Webex Meeting URL **https://bit.ly/2FvsXmk**

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

बीस वर्ष भोगी पीड़ा, अब खुश हूं !

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियो करेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है।

गोरखपुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं। उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती हूँ। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉसपीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसटकर चलना ही उनकी नियति था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉक्टर ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पॉव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

नारायण सेवा संस्थान ने मुझे जिंदगी जीना सीखाया

मेरा नाम धमेन्द्र है जिला धौलपुर, राजस्थान से हूँ। मैं छोटा था मेरा पैर टेढ़ा हो गया। मतलब मेरे को चलने में प्रॉब्लम होती थी। तो फिर मैं नारायण सेवा संस्थान आया। वहां पर मैंने ऑपरेशन करवाया, मेरा पैर सीधा हो गया। केलीपर लगा रखा ये। तो अब चलने में कोई दिक्कत नहीं है।

वहां पे एक पैसा भी नहीं लगा। खाना– पीना– रहना नारायण सेवा संस्थान का था।

यही पर मैंने मोबाईल रिपेयरिंग का काम भी सीखा। और अपने लिये दो वक्त की रोटी का हुनर हमेशा के लिये पा लिया।

अब मैं जॉब कर रहा हूँ। आज मैं अच्छे से कमा सकता हूँ। मेरे को कोई दिक्कत नहीं हैं ।

एन्ड्रोयड वगैरह सेट है, सब टीवी और हार्डवेयर दोनों काम जानता हूँ वो इसकी वजह से ग्राहक भी बहुत अच्छे आ रहे हैं और दस हजार रुपये महीने के समथिंग कमाता हूँ।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 7500 रू.

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

व्यक्ति जब मोह में जीता है तो वह भयग्रस्त भी होता है। मोह ही भय का जनक है। जिस दिन मोह से मुक्ति हो जाती है उस दिन स्वाभाविक रूप से निर्भयता का आविर्भाव जो जाता है। भयग्रस्त जीवन व्यक्ति के गुणों को पनपने नहीं देता है जबकि निर्भय होकर व्यक्ति अपने आत्मिक गुणों को जीने लगता है। मानव की सारी उन्नति भय और निर्भय से प्रभावित होती रही है। व्यक्ति को असुरक्षा का भय, माया का भय, यश और कीर्ति के नाश का भय, अपनी छवि का भय जीवन भर सताता रहता है तथा वह उस भय के कारण अपना नैसर्गिक जीवन–यापन नहीं कर पाता। उस पर हर समय कोई भार सा अनुभव होता रहता है। पर जिस क्षण व्यक्ति भय की चादर को फेंककर निर्भयता की सांस लेता है उसका आत्मबल अनेक गुणा होकर उभर आता है। यदि निर्भयता की यात्रा करनी है तो हमें मोह पर चोट करनी होगी। मोह को नियंत्रित करते हुए धीरे–धीरे उससे मुक्त होना होगा।

कुछ काव्यमय

मोहग्रस्त इंसान
भूल जाता है विवेक।
वह भटकने लगता है,
रह नहीं पाता नेक।
मोह से भय, भय से हानि
यह तय रास्ता है।
व्यक्ति कैसे निर्भय होगा,
जब तक मोह से वास्ता है।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

हर घंटे साबुन से अपने हाथों को तक़रीबन 20 सेकंड तक धोएँ।

अपनों से अपनी बात

मातृ–पितृ देवो भवः

एक बालक अपने माता–पिता की बहुत सेवा करता था। माता–पिता की सेवा–भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान उसके घर आ गए। उस समय वह माँ के पैर दबा रहा था। भगवान उसके घर के द्वार पर खड़े रहकर बोले–द्वार खोलो बेटा। मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ।

बालक ने विनम्र स्वर में उत्तर दिया–प्रतीक्षा कीजिए प्रभु, मैं माँ की सेवा में लगा हूँ। कुछ देर बाद प्रभु ने पुनः कहा 'द्वार खोलो, बेटा' बालक ने कहा–'प्रभु!' माँ को नींद आने पर ही मैं द्वार खोल पाऊंगा।

मैं लौट जाऊंगा।–भगवान ने उत्तर दिया।

'आप भले ही लौट जाएं। आपके दर्शन न पाने का मुझे दुख होगा, भगवन् किंतु मैं सेवा को बीच में नहीं छोड़ सकता।'

कुछ देर बाद सेवा समाप्त हुई और बालक ने दरवाजा खोला तो पाया कि भगवान तो द्वार पर ही खड़े हैं। उन्होंने बालक से कहा–लोग मुझे पाने के लिए कठोर तपस्या करते हैं परंतु तुम्हें दर्शन देने के लिए मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ी।

हे ईश्वर! जिन माता–पिता की सेवा ने आपको मुझ तक आने को मजबूर कर दिया उन माता–पिता की सेवा को बीच में छोड़कर कैसे आ सकता था?

प्रभु उसके जवाब से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे खुश रहने का आशीष देते हुए कहा कि माता–पिता साक्षात तीर्थ हैं। उनकी सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं।

बंधुओं! यही जीवन का सार है। जीवन में माता–पिता तथा उनकी सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। माता–पिता ही हमें जीवन देते हैं। माता–पिता ही कठोर परिश्रम और भूख–प्यास बर्दाश्त कर संतान का भविष्य बनाते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम कभी उन्हें कष्ट न होने दें। उनकी आँखों में कभी भी आँसू ना आएं चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

मातृ पितृ देवो भवः की भावना हमारे यहाँ आदिकाल से प्रचलित है। कहते हैं जो माता–पिता की सेवा कर लेता है उसे पूजा–पाठ या देव दर्शन की भी आवश्यकता नहीं होती है। माता–पिता तथा उनकी सेवा से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं है।

– कैलाश 'मानव'

विश्वास की गहराई

एक बार नारद जी एक पर्वत से गुजर रहे थे। उनकी नजर एक विशाल वटवृक्ष के नीचे तप करते हुए एक तपस्वी पर पड़ी। नारद जी के प्रभाव से तपस्वी की आंखें खुली। उसने नारद जी को प्रणाम करके पूछा कि उसे प्रभु के दर्शन कब होंगे। नारद जी ने पहले तो कुछ कहने से इनकार किया फिर बार–बार आग्रह करने पर बताया कि इस वटवृक्ष पर जितनी छोटी बड़ी टहनियां है, उतने ही वर्ष उसे और लगेंगे। नारदजी की बात सुनकर तपस्वी निराश हो गया। वह सोचने लगा कि इतने वर्ष उसने घर गृहस्थी में रहकर भक्ति की होती और पुण्य कमाए होते तो उसे ज्यादा फल मिलते। वह बोला मैं बेकार ही तप करने आ गया। नारदजी उसे हैरान परेशान देखकर वहां से चले गए। आगे जाकर संयोग से वह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां एक और तपस्वी तप कर रहा था। वह एक बहुत पुराने और असंख्य के पत्तों से भरे हुए पीपल के वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था।

नारद जी को देखते हुए वह उठ खड़ा हुआ और उसे भी प्रभु दर्शन में लगने वाले समय के बारे में पूछा। नारदजी ने उसे टालना चाहा मगर उसने बार–बार अनुरोध किया। इस पर नारदजी ने कहा कि इस वृक्ष पर जितने पत्ते हैं। कुछ वर्ष अभी और लगेंगे।

हाथ जोड़कर खड़े उस तपस्वी ने जैसे ही यह सुना, खुशी से झूम उठा और बार बार यह कहकर नृत्य करने लगा कि प्रभु उसे दर्शन देंगे। उसके रोम–रोम से हर्ष की तरंगे उठ गई थी। उसे देख अब नारद जी सोच रहे थे रास्ते में मिले दोनों में कितना अंतर है? एक को अपने तप भी संदेह है वह मोह से अभी तक उबर नहीं सका है और दूसरे को ईश्वर पर इतना विश्वास है कि वह प्रतीक्षा करने के लिए तैयार है।

उसी समय वहां अचानक अलौकिक प्रकाश फैल गया। प्रभु प्रकट होकर तपस्वी से बोले वत्स! नारद ने जो कुछ बताया वह सही था। तुम्हारी श्रद्धा और विश्वास में इतनी गहराई है कि मुझे अभी और यहीं प्रकट होना पड़ा।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सुबह 4 बजे से ही काम शुरू कर दिया। वर्षा काफी देर से थमी हुई थी फिर भी भट्टियों पर चद्दरें तान दी ताकि वर्षा आ जाये तो सत्तू खराब नहीं हो। सत्तू को ढकने के लिये भी बोरियां मंगवा रखी थी। घन्टे भर तक कार्य निर्बाध रूप से चलता रहा मगर इसके बाद वर्षा शुरू हो गई, देखते ही देखते इसने विकराल रूप धारण कर लिया। पतरों पर फैलाये सत्तू को बोरियों से ढक लिया मगर सभी कार्यकर्ता बुरी तरह भीग गये। वर्षा थोड़ी देर अपना वेग बता कर शान्त हो गई तो शेष कार्य यथावत सम्पन्न हो गया।

प्रति माह 100 रु. भेजने का संकल्प करने वाले पी.जी. जैन का एक और पत्र आया। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि वे शारीरिक रूप से भी सहयोग देना चाहते हैं, रुपये देने वाले तो बहुत मिल जायेंगे। कैलाश ने उन्हें निमंत्रण दे दिया। अगले रविवार को शिविर था, इसकी जानकारी भी दे दी। वे शनिवार को ही आ गये। अपने साथ गरीब बच्चों में वितरित करने के लिये ढेर सारी कापियां, पेन्सिलें इत्यादि भी अपने साथ लेकर आये। इसके अलावा दो हजार रु. की नकद राशि अलग से दी।

कैलाश उन्हें अपने घर ले गया और भोजन कराया, रात को अपने घर पर ही ठहराया। अगले दिन शिविर के लिये निकलना था। इस बार कार्यकर्ताओं की टोली बढ़ गई। उन दिनों टी.वी. पर रामायण सीरियल का बोल बाला था। यह रविवार को ही आता था और प्रत्येक व्यक्ति इसे देखता था। जितनी देर वह सीरियल चलता रहता उतनी देर पूरे शहर में सन्नाटा छा जाता, ऐसे प्रतीत होता जैसे कर्फ्यू लग गया हो।

इस सीरियल को देखने के मोह में कई लोग शिविर से कन्नी काट गये। जो समर्पित थे, ऐसे जुझारू सेवा भावी सीरियल छोड़कर शिविर में आये। शिविर में डॉक्टर के सहायक भी आने वाले थे, वे नहीं आये तो कैलाश ने प्रशान्त को उनके घर भेजा, उन्होंने बहाना बनाकर आने से मना कर दिया। असली कारण तो सब को पता था, मगर क्या कर सकते थे। जितने लोग आये वे भी पिछली बार से तो ज्यादा ही थे।

अंश–138

पूरे शरीर में ऐसे नुकसान पहुंचाती है डायबिटीज

आँखें – इसके मरीजों में मोतियाबिंद, आंख के पर्दे पर सूजन व दृष्टिहीनता की आशंका रहती है। समय पर इलाज न मिलने से आंखों की रोशनी हमेशा के लिए जा सकती है। इसलिए मरीज नियमित जांच कराएं।

हृदय – डायबिटीज– के 3 में से 2 रोगियों की मृत्यु हार्ट डिजीज या स्ट्रोक से होती है। डायबिटीज के रोगियों को हार्ट डिजीज की आशंका 2–4 गुना बढ़ जाती है। रोगी स्मोकिंग करता है तो यह खतरा और भी बढ़ जाता है।

किडनी – अनियंत्रित डायबिटीज से गुर्दों पर बुरा असर पड़ता है। किडनी इंफेक्शन के बाद क्रॉनिक किडनी डिजीज होती है। ब्लड प्रेशर भी असंतुलित रहता है। किडनी रोग होने पर मरीज का डायलिसिस होता है।

मोटापा – मधुमेह के तीन रोगियों में से एक मोटापे से ग्रसित होता है। शहरी क्षेत्रों में 20 वर्ष से कम उम्र के युवाओं में करीब 16 फीसदी को मोटापे की समस्या है। अधिकतर मरीजों को पहले से मोटापे की समस्या होती है।

कैंसर – डायबिटीज से अच्छे सेल्स डैमेज हो जाते हैं। इसके रोगियों में कई तरह के कैंसर का खतरा भी बढ़ जाता है। इनमें कोलन, प्रोस्टेट, किडनी, ब्रेस्ट, पैंक्रियाज, लिवर, लिम्फोमा और ब्लड कैंसर प्रमुख है।

हड्डियां – इस रोग का हड्डियों की बीमारी से सीधा संबंध है। इससे फ्रैक्चर और जोड़ों की समस्या बढ़ती है। डायबिटीज–1 के रोगियों में हड्डियों की कमजोरी आम बात है। डायबिटीज–2 में हड्डियों का घनत्व कम हो जाता है।

बड़ों का ही नहीं बच्चों के लिए भी सुपर फूड है - रागी

इसमे फाइबर, कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन, विटामिन बी1, बी2 और कई अन्य पोषक तत्त्व होते हैं। अन्य अनाजों की तुलना में कैल्शियम और प्रोटीन बहुत ज्यादा होता है। कार्ब्स कम होने से वजन नहीं बढ़ता है। हड्डियों, मांसपेशियों और जोड़ों की समस्याओं में इसे खाना चाहिए। मानसिक समस्याओं में जैसे तनाव, अवसाद और ब्लड प्रेशर में रागी काफ़ी फ़ायदेमंद होती है।

कैसे खाएं : इसे रोटी, हलवा, सूप, और चीला के रूप में खा सकते हैं।

कौन न खाएं : जिन्हें पथरी और थायरॉइड की समस्या है वे कम खाएं। थायरॉइड रोगी में कैल्शियम वाली चीजे खाने से आयोडीन कम होता है। इससे थायरॉइड का स्तर बढ़ जाता है।

अनुभव अमृतम्

तो बात 21 जोड़ों के विवाह की, और क्रम चलता रहा, और 9 फरवरी 2020 को 47 जोड़ों का विवाह सम्पन्न हुआ। प्रशांत भैया का बड़ा परिश्रम है। कितनी उमंग? संगीत की टीम दोनों जगह बिराजी हुई है बाहर भी, अन्दर भी। विवाह के गीत गाये जा रहे हैं, और जो दिव्यांग सशक्तिकरण सभागार नया जो बना सेवातीर्थ में, उसमें सूर्या गेट से एक विशेष रथ में एक युवक दूल्हे राजा और दुल्हन रानी को बिठाया गया। रथ हाथ से खींच करके ले जाया जा रहा है। जया जी की रंगोली हूबहू। जया जी दिव्यांग है लेकिन मानसिक रूप से बहुत सबल है। दिल्ली से, मुम्बई से, कलकत्ता से 1500 महानुभाव। नेपाल से, यू.एस.ए. से, यूके. से, ब्रिटेन से, लन्दन से भीखूभाई पटेल और साथी करीबन 11 महानुभाव यू.के. से पधारे। आस्ट्रेलिया से भी पधारे।

प्रभु की कृपा भयो सब काजू।
जनम हमार सफल भयो आजू।।

47 जोड़ों को तोरण के साथ में। 46 को आगे ले जाया गया और एक जोड़ा था उस वधू को विशेष पालकी में बिठाया गया। गीतों की अच्छी आवाज, मन में सपने इन्द्रधनुष के सातों रंग परमार्थ की महान् भावनाएं। कभी–कभी सोचता हूँ, निष्काम भक्ति है। यह परिश्रम सभी का परमात्मा की कृपा से है। ये परिश्रम करवाने की शक्ति, ये चलाने की शक्ति, ये देह–देवालय की शक्ति प्रशांत को और सभी को प्रभु ने दी है। कितना उत्साह? कितनी उमंग? ध्यान लग गया। पालकी को स्टेज पर ले जाया गया। वहाँ उतारा गया। शुभनाम पुकारे गये। आइये दिल्ली वाले, मुम्बई वाले, कोलकत्ता वाले भाइयों और बहनों पधारो। कन्यादान वाले स्टेज पर बिराजे। पहले तो दूल्हा–दुल्हन बैठे, और फिर उसी स्टेज पर 40 से अधिक समाजसेवी बैठे। प्रशांत भैया का संयोजन, ओमपाल जी भैया सभी दौड़ रहे, और हाइड्रोलिक स्टेज पर एक दूल्हा–दुल्हन को वरमाला देकर खड़ा किया गया। प्रशांत भैया और वन्दना जी हाइड्रोलिक स्टेज पर रहे। मधुर गीतों के साथ 'झुक जाइये तनिक रघुवीर लली मेरी छोटी सी।' और पहले वरमाला दूल्हे के गले में डाली, वरमाला हुई। सभी की वरमाला हुई 1:00 बजे तक, 3.00 बजे विदाई हुई।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 17, (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2018-2020